## Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

## License Information

**अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)** (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

# अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

## COL

*कुलुस्सियों 1:1–14, कुलुस्सियों 1:15–23, कुलुस्सियों 1:24–2:5, कुलुस्सियों 2:6–23, कुलुस्सियों 3:1–17, कुलुस्सियों 3:18–4:1, कुलुस्सियों 4:2–6, कुलुस्सियों 4:7–18*

## कुलुस्सियों 1:1–14

इपफ्रास ने कुलुस्से के लोगों के साथ यीशु के बारे में सुसमाचार को साझा किया था।

फिर वे पौलुस से मिलने गए और उन्हें कुलुस्सियों के विश्वासियों के बारे में बताया।

कुलुस्सियों के विश्वासियों का यीशु में दृढ़ विश्वास था और एक-दूसरे के प्रति गहरा प्रेम था। यह उस आशा पर आधारित था जो परमेश्वर के लोगों को भविष्य में उनसे प्राप्त होगी।

पौलुस ने विश्वास, आशा और प्रेम को सुसमाचार का फल कहा। जब यीशु के बारे में सत्य का प्रचार किया जाता है, तो यह उन लोगों को बदल देता है जो इसे स्वीकार करते हैं। लोग ऐसे तरीके से सोचने, बोलने और कार्य करने लगते हैं जो परमेश्वर को प्रसन्न करता है। यही बात है जो पौलुस ने फल के बारे में बात करते समय कही थी।

कुलुस्सियों के विश्वासियों के लिए पौलुस की प्रार्थना थी कि वे फल लाते रहें। इसमें धैर्य रखना और परमेश्वर का धन्यवाद करना शामिल था। इसमें बुद्धि और समझ होना और परमेश्वर को जानना शामिल था। ये बातें उन्हें परमेश्वर के राज्य में यीशु के साथ सदा के लिए जीने के लिए तैयार करती थीं।

## कुलुस्सियों 1:15–23

पौलुस ने स्पष्ट रूप से बताया कि यीशु कौन हैं और उन्होंने क्या किया है। यीशु परमेश्वर हैं और लोगों को दिखाते हैं कि परमेश्वर कैसे हैं। मसीह हर उस चीज़ की शुरुआत हैं जो अस्तित्व में है। वे हर चीज़ को अर्थ देते हैं। यहाँ तक कि आध्यात्मिक प्राणी भी उन्हीं के द्वारा रचे गए।

पौलुस मसीह की देह और कलीसिया के बारे में बात कर रहे थे, और यीशु को देह का सिर बताया। इसका अर्थ है कि यीशु कलीसिया के अगुवे हैं और विश्वासियों को उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

भविष्य में विश्वासियों का पुनरुत्थान उसी प्रकार होगा जैसे यीशु का हुआ था। इसे पुनरुत्थान कहा जाता है। उन्हें ऐसा जीवन प्राप्त होगा जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता। मसीह की मृत्यु परमेश्वर और उनकी सृष्टि को फिर से शान्ति में एक साथ लाती है।

जब यीशु ने क्रूस पर अपने प्राण त्याग दिए, उन्होंने पाप की शक्ति को समाप्त कर दिया। जो मसीह पर विश्वास करते हैं, वे पाप के दोष और अपराध से मुक्त हैं। पौलुस ने कुलुस्सियों को सुसमाचार द्वारा लाई गई आशा में मजबूत होते रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

## कुलुस्सियों 1:24–2:5

जब यीशु पृथ्वी पर थे, उन्होंने दूसरों के लिए अपना बलिदान दिया क्योंकि वे उनसे प्रेम करते थे। इससे उन्हें भयानक कष्ट सहना पड़ा। परन्तु उनके कष्ट ने उन्हें महिमा दिलाई जब परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित किया।

पौलुस ने प्रेम से दूसरों की सेवा करने के लिए यीशु के उदाहरण का अनुसरण किया। पौलुस ने उन्हें यीशु के बारे में सत्य बताकर सेवा की। पौलुस ने परमेश्वर के वचन को पूरी तरह से साझा किया। पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों को प्रचार किया कि यीशु सब चीज़ों के प्रभु हैं।

उन्हें यह प्रचार करने के लिए बन्दीगृह में डाल दिया गया था। वे कष्ट उठा रहे थे क्योंकि उन्होंने यीशु के उदाहरण का निष्ठापूर्वक पालन किया था। इस प्रकार, उनका कष्ट यीशु के कष्ट का हिस्सा था। कष्ट ने पौलुस को प्रेरित के रूप में मेहनत करने से नहीं रोका। यीशु ने उन्हें काम करते रहने की समर्थ दी।

यहाँ तक कि बन्दीगृह से भी उन्होंने विश्वासियों को विश्वास में मजबूत बनने में मदद करने के लिए कड़ी मेहनत की। वह नहीं चाहते थे कि वे उन शिक्षाओं से धोखा खाएं जो सुनने में अच्छी लगती थीं परन्तु सच नहीं थीं। वह चाहते थे कि विश्वासियों को पूरी तरह से समझ में आए कि यीशु मसीह उनके अंदर निवास करते हैं। इस सत्य को ही पौलुस ने मसीह का रहस्य कहा।

## कुलुस्सियों 2:6–23

कुलुस्सियों ने प्रभु यीशु मसीह में विश्वास किया था। फिर भी उनमें से कई लोग ऐसी शिक्षाओं पर विश्वास करने लगे थे जो सत्य नहीं थीं।

कुलुस्से के विश्वासियों को यह सिखाया जा रहा था कि उन्हें यहूदी व्यवस्थाओं का पालन करना चाहिए। परिणामस्वरूप, वे सोचने लगे कि उन्हें खतना कराना चाहिए और यहूदी पर्वों के बारे में व्यवस्थाओं का पालन करना चाहिए।

वे मानते थे कि उन्हें दर्शन देखना चाहिए और स्वर्गदूतों की उपासना करनी चाहिए। वे यह भी मानते थे कि उन्हें इस बात को लेकर सख्त होना चाहिए कि वे क्या खा सकते हैं और क्या छू सकते हैं।

पौलुस ने यह बहुत स्पष्ट किया कि इन बातों को सिखाने वाले लोग ढोंगी थे। वे कुलुस्सियों को नियंत्रित करना चाहते थे। पौलुस ने यह भी स्पष्ट किया कि कुलुस्सियों को यह सब करने की आवश्यकता नहीं थी। उनके पास पहले से ही सब कुछ था जो उन्हें चाहिए था और वे पूर्ण थे। यह इसलिए था क्योंकि वे यीशु के थे।

बपतिस्मा के माध्यम से यीशु के अनुयायी उसके साथ निकटता से जुड़ जाते हैं। बपतिस्मा यीशु के साथ दफन होने और उनके साथ जीवन में उठाए जाने का चित्रण है। बपतिस्मे के दौरान पानी में नीचे जाना, मरने को दर्शाने का तरीका है। फिर विश्वासी पानी से बाहर आते हैं। यह मृतकों में से जी उठने को दर्शाने का तरीका है। विश्वासी मसीह के साथ नया जीवन प्राप्त करते हैं। इसलिए उन्हें किसी और या किसी चीज़ के द्वारा नियंत्रित नहीं होना चाहिए। उन्हें किसी भी ऐसी शिक्षा को अस्वीकार करना चाहिए जो यह सिखाती है कि यीशु प्रभु नहीं हैं।

## कुलुस्सियों 3:1–17

कुलुस्से के विश्वासियों को अपने पुराने तौर-तरीकों को छोड़ना पड़ा। उनके सोचने, बोलने और कार्य करने के पुराने तरीके पापपूर्ण थे। ये तरीके उनके और उनके समुदायों के लिए नुकसानदायक थे।

कुलुस्सियों को अपनी पापपूर्ण इच्छाओं का पालन करना बंद करना पड़ा क्योंकि अब उनके पास नया जीवन था। यीशु सभी विश्वासियों के नए जीवन का केंद्र हैं। पौलुस ने कहा कि यीशु सब कुछ हैं और सब में हैं। पौलुस का मतलब था कि यीशु सबसे महत्वपूर्ण हैं जो अस्तित्व में हैं। मसीह के शासन से परे कुछ भी नहीं है।



इस कारण, मनुष्य के विभिन्न समूहों में विभाजन अब कोई मायने नहीं रखते। परमेश्वर के लोग एक देह के रूप में साथ रहने के लिए हैं। यह संभव है क्योंकि यीशु की शान्ति उनके हृदयों में शासन करती है। जब वे समझते हैं कि परमेश्वर उन्हें कितनी प्रियता से प्रेम करते हैं, तो वे एक-दूसरे से प्रेम कर सकते हैं।

## कुलुस्सियों 3:18–4:1

पहले पौलुस ने इस बारे में निर्देश दिए थे कि परमेश्वर के परिवार में विश्वासियों को कैसे साथ रहना चाहिए। उन्हें दया और कृपा को ऐसे धारण करना था जैसे कि वे वस्त्र हों।

पौलुस ने दिखाया कि उन्हें अपने मानव परिवारों के भीतर भी ऐसा कैसे करना चाहिए। उनके निर्देश उनके समय के रोमी देशों में प्रचलित रीति से अलग थे। उस समय महिलाओं, बच्चों और दासों को आज्ञा मानने की शिक्षा देना आम बात थी। फिर भी पौलुस ने विश्वासियों को सिखाया कि वे अपने संबंधों को यीशु की सेवा पर आधारित करें।

हर किसी को, सेवा करने वाले अगुवे होने के यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना था। पौलुस ने पतियों को प्रेम दिखाने की शिक्षा दी। उन्होंने पिताओं को दया दिखाने की शिक्षा दी। उन्होंने स्वामियों को विनम्र और न्यायपूर्ण होने की शिक्षा दी। और उन्होंने सभी विश्वासियों को याद दिलाया कि वे प्रभु यीशु के दास हैं। यीशु वह स्वामी हैं जिनकी सभी आज्ञाओं का उन्हें पालन करना चाहिए।

## कुलुस्सियों 4:2–6

अध्याय 1 में पौलुस ने कुलुस्सियों के विश्वासियों को उनके लिए की गई प्रार्थनाओं के बारे में बताया था। यहाँ पौलुस ने कुलुस्सियों के विश्वासियों से अपने और अपने साथ काम करने वालों के लिए प्रार्थना करने को कहा। इससे पता चलता है कि पौलुस कितने विनम्र अगुवे थे। पौलुस चाहते थे कि कुलुस्सियों के विश्वासी उनके कार्य में उनके साथी बनें।

हालाँकि उन्होंने कभी एक-दूसरे से मुलाकात नहीं की थी, वे प्रार्थना के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े रह सकते थे। पौलुस ने कुलुस्सियों को प्रोत्साहित किया कि वे अपनी बातों और कार्यों में बुद्धिमान बनें। उनके शब्दों में अनुग्रह होना चाहिए जब वे यीशु के बारे में प्रश्नों का उत्तर दें।

## कुलुस्सियों 4:7–18

पौलुस ने अपने साथ काम करने वाले कई लोगों का उल्लेख किया। उनमें से अधिकांश लोग उनेसिमुस की तरह गैर-यहूदी थे।

**कुलुस्सियों** *4:7–18*

कई यहूदी विश्वासियों ने पौलुस का विरोध किया क्योंकि वह यह प्रचार कर रहे थे कि यीशु ने अन्यजातियों का स्वागत परमेश्वर के परिवार में किया है। यही कारण था कि वह उस समय बन्दीगृह में थे। इसलिए, पौलुस के लिए यह सांत्वना की बात थी कि यहूदी जैसे कि यूहन्ना मरकुस और यूस्तुस उनके साथ काम कर रहे थे।

पौलुस ने कुलुस्से के पास की कलीसियाओं में कई लोगों का भी उल्लेख किया। ये सभी पुरुष और महिलाएँ एक-दूसरे का सम्मान करते थे और गहराई से परवाह करते थे। पौलुस परमेश्वर के लोगों को एक देह के रूप में शान्ति में रहने का उदाहरण दे रहे थे।

पौलुस की पत्री, कुलुस्से और लौदीकिया की कलीसियाओं को दिए गए निर्देशों के साथ समाप्त हुआ। कलीसियाओं के लिए उनकी पत्रियों का साझा करना, सामान्य प्रथा थी। यह अन्य तरीका था जिससे पौलुस ने विश्वासियों को प्रेम में बंधे रहने के लिए प्रोत्साहित किया।